सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 ● अंक : 6 ● 5 सितम्बर 2019 ● मूल्य : 20 रू.

नवप्रभात

मैं एकान्त में बैठा था। चिन्तन कर रहा था। विचारों में एकरूपता न थी। विचार का वाहन अलग-अलग दिशाओं से गुजर रहा था।

एक दिशा का लक्ष्य न होने से भटकाव था।

तभी मन में एक विचार कौंधा। मन उस पर अटक गया। विचार गहराई के साथ मन-समन्दर में तैरने लगे। उस विचार का प्रारंभ एक प्रश्न से हुआ था। प्रश्न अपने आप से था। उत्तर भी अपने भीतर से ही पाना था। प्रश्न जितनी जल्दी उभरा था। उत्तर मिलने में थोडी देर लगी थी।

उस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये बुद्धि को थोड़ी कसरत करनी पड़ी थी।

मैंने स्वयं से प्रश्न किया था-इस जीवन में क्या करना है? इसकी संक्षिप्त व्याख्या क्या हो सकती है?

क्या करना है, इसकी सूची तो बहुत लम्बी हो रही थी। पर उससे मन को जरा भी संतुष्टि नहीं मिल रही थी। उत्तर संक्षिप्त पर पूर्ण होना चाहिये।

तभी मन में उत्तर की पंक्तियाँ चमकने लगी।

तुम्हें अपने जीवन में अतीत, वर्तमान और भविष्य के लिये काम करना है।

अतीत में हुए कर्म बंधन को तोड़ना है।

वर्तमान में कर्म बंध न हो, ऐसी सावधानी रखनी है।

और भविष्य में दुष्कृत्यों का परिणाम न भोगना पड़े, ऐसा वर्तमान बनाना है।

तीनों कालों से जुड़ा विचारों का यह प्रवाह भविष्य को संवारने की गंगा है। क्योंकि तीनों कालों में सबसे महत्त्वपूर्ण काल है-हमारा भविष्य! भविष्य को केन्द्र में रख कर हमें अपने वर्तमान का निर्माण करना होता है। मात्र वर्तमान के लक्ष्य से वर्तमान को नहीं जीया जाता।

वह हो सकता है कि अपने वर्तमान को अपनी दृष्टि से अच्छा बना दें पर भविष्य बिगाड देगा। भविष्य-लक्षी वर्तमान अतीत को सुधार लेता है... भविष्य को संवार देता है। इस वाक्य के मंथन ने मेरे चित्त को प्रसन्नता से भर दिया।

आगम मंजूषा
भगवान महावीर

जहा लाभो तहा लोभो लाभा लोभो पवड्ढई।
दोमासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं ॥

जैसे जैसे लाभ होता है वैसे वैसे लोभ होता है। लाभ से लोभ बढ़ता है। दो मासे सोने से पूर्ण होनेवाला कार्य करोड़ से भी पूर्ण नहीं होता।

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 6 5 सितम्बर 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1.	नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. 04
2.	सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म. 0
3.	ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. 07
4.	गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. 08
5.	उपवास : आध्यात्मिक और वैज्ञानिक	मुनि मनितप्रभसागरजी म. 10
6.	खरतरगच्छ का राजाओं से सम्बन्ध	महोपाध्याय विनयसागरजी 12
7.	प्रेरक कथा	कैलाश बी. संकलेचा 15
8.	अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. 16
10.	समाचार दर्शन	संकलित 18
11.	जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. 42

पर्व एवं विशेष दिवस

16 सितम्बर, सोमवार	:	अकबर प्रतिबोधक दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्रसूरिजी म. की 406 वीं पुण्यतिथि, बिलाड़ा में भव्य मेला
21-22 सितम्बर	:	धुलिया में अ.भा.खरतरगच्छ युवा परिषद् एवं अ.भा. खरतरगच्छ महिला परिषद् का अधिवेशन
26 सितम्बर से 19 अक्टूबर	:	धुलिया में पू. गच्छाधिपतिश्री द्वारा सूरि मंत्र चतुर्थ-पंचम पीठिका मौन महासाधना
27 सितम्बर, शुक्रवार	:	श्री महावीरप्रभु गर्भापहार कल्याणक
28 सितम्बर, शनिवार	:	पाक्षिक प्रतिक्रमण
5 अक्टूबर, शनिवार	:	नवपद ओली प्रारंभ
12 अक्टूबर, शनिवार	:	पाक्षिक प्रतिक्रमण
13 अक्टूबर, रविवार	:	नवपद ओली समाप्ति
20 अक्टूबर, रविवार	:	धुलिया में प्रातः नौ बजे सूरि मंत्र महापूजन तथा महामांगलिक

विज्ञापन हेतु हमारे मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

गुरु स्मृति
66

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

कोठी मंदिर की प्रतिष्ठा के पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री विहार कर कुलपाकजी तीर्थ पधारे। वहाँ श्री चोमुख परमात्मा का मंदिर तैयार था। उसकी प्रतिष्ठा करानी थी। संघ की विनंती स्वीकार कर पूज्यश्री ने जिनमंदिर की प्रतिष्ठा करवाई।

प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् पूज्यश्री चातुर्मास हेतु चंद्रपुर पधारे। चंद्रपुर/चांदा का वह चातुर्मास ऐतिहासिक था। यहीं पर पूज्यश्री ने उदयपुर के चित्रकार को बुलाकर दादा गुरुदेव के जीवन-वृत्त को आधार बना कर अपने मार्गदर्शन में चित्रों का निर्माण करवाया था।

आज भी अधिकतर दादावाडियों में उन्हीं चित्रों को आधार बना कर पट्ट बनाये जाते हैं। गच्छ में इस प्रकार का कार्य इतिहास में पहली बार हुआ था। मद्रास से उन्हीं चित्रों से सुसज्ज श्वेत-श्याम पुस्तक का प्रकाशन हुआ था। बाद में कोलकाता के चातुर्मास में उन्हीं चित्रों को रंगीन पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था। यह पुस्तक छोटे आकार में थी। बाद में बड़े आकार में 'दादा चित्र संपुट' के नाम से उन चित्रों का प्रकाशन हुआ था।

चांदा का चातुर्मास आराधना की दृष्टि से एक इतिहास बना था। पूज्यश्री ने भगवती सूत्र पर प्रवचन फरमाये थे। उनके प्रभावक प्रवचनों से प्रभावित होकर श्री घासीरामजी लूणकरणजी खजांची परिवार ने छह री पालित पद यात्रा संघ निकालने व महामंगलकारी पंच मंगल महाश्रुतस्कंध उपधान तप करवाने की अपनी भावना अभिव्यक्त की।

उस समय में उपधान तप की आराधना

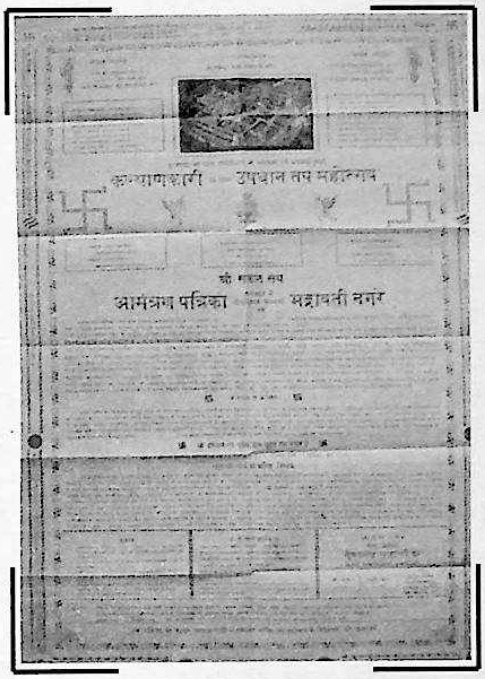

क्वचित् ही हुआ करती थी। ऐसे वातावरण में उपधान तप की भावना निश्चित ही अनुमोदनीय थी।

पूज्यश्री ने उनकी भावना को मूल्य देते हुए निश्रा प्रदान करने की विनंती स्वीकार की।

चन्द्रपुर से श्री भद्रावती तीर्थ का चार दिवसीय छह री पालित संघ आयोजित हुआ। वि. सं. 2012 मिगसर वदि 4 शनिवार ता. 3 दिसम्बर 1955 को संघ का प्रस्थान हुआ। पहला पडाव मोरवा में रखा गया जहाँ संघपति परिवार की ओर से स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ। दूसरे दिन घोडपेठ में पडाव रहा। तीसरे दिन सोमवार को भद्रावती तीर्थ में प्रवेश किया। संघपति मालारोपण विधान मिगसर वदि 7 मंगलवार ता. 6 दिसम्बर 1955 को संपन्न हुआ। उसी दिन इसी परिवार की ओर से उपधान तप का भी प्रारंभ हुआ।

गोत्र का इतिहास
17

समदरिया/समदड़िया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पारकर देश स्थित पद्मावती नगर के पास के एक गांव में सोढा राजपूत परिवार रहता था। उसका नाम था समन्दसी! उसके आठ पुत्र थे- देवसी, रायसी, खेतसी, धन्नो, तेजमाल, हरि, भोमो तथा करण!

पूरा परिवार अत्यंत गरीबी में जीता था। कृषिकर्म करता था। पर आय की अपेक्षा व्यय अधिक था। वहीं निवास करने वाले साहूकार धन्ना पोरवाल से वह कर्ज लेकर जैसे-तैसे अपना काम चलाता था। खेती निष्पन्न होने पर कर्ज चुका दिया करता था। थोडा बहुत जो बचता था, उसी से अपनी तथा अपने परिवार की आजीविका चलाता था।

एक बार गांव में विहार करते हुए पधारे आचार्य भगवंत श्री जिनवल्लभसूरि के दर्शन हुए। आचार्य भगवंत की प्रभावशाली मुद्रा देख कर प्रभावित हुआ। अपनी रामकहानी सुनाते हुए निवेदन किया- गुरुदेव! पूरा परिवार दु:ख में जी रहा है। कर्ज में डूबा हुआ है। गुरुदेव! आप कुछ उपाय फरमावो जिससे हमारी समस्या का समाधान हो।

गुरुदेव ने कहा- जीवन में दु:ख-सुख अपने कर्मों के कारण ही प्राप्त होता है। धर्म कार्य करने से सुख व पाप कर्म करने से दु:ख मिलता है। यदि तुझे सुख चाहिये तो धर्म की आराधना कर! अहिंसा का पालन कर! समता की साधना कर!

गुरु महाराज ने उसे धर्म का रहस्य समझाया। राग द्वेष से रहित होकर समभाव में रहते हुए प्रतिदिन सामायिक करने की प्रेरणा दी।

समन्दसी को अहिंसा का उपदेश रुचिकर लगा। उसने हिंसा का सर्वथा त्याग कर दिया। गुरु महाराज से विधि जानकर दोनों समय सामायिक करने लगा जिससे उसे परम आनंद की अनुभूति होने लगी।

सेठ धन्ना पोरवाल ने जब उसकी सामायिक आदि की क्रियाओं को जाना तो बहुत आनन्दित हुआ। समन्दसी को अपना साधर्मिक जान कर वह सहयोग करने लगा। उसके आठों ही पुत्रों को अपनी ओर से गुरुकुल भेजा। उनकी शिक्षा का पूरा प्रबन्ध सेठ करने लगा।

यह देख कर समन्दसी विचार करने लगा कि यही सेठ कर्ज वापस देने में यदि थोड़ी-सी भी देर हो जाती तो नाराज हो जाता और आज वह स्वयं चला कर मेरा और मेरे परिवार का पूर्ण सहयोग कर रहा है। इसके पीछे क्या राज है?

उसने चिंतन किया तो पाया कि धर्म ही इसमें मुख्य कारण है। धर्म की आराधना का महत्व कितना अधिक है कि वह मेरा सहज सहयोगी बन गया। उसके हृदय में जिनधर्म के प्रति अहोभाव बढता गया।

तभी कुछ ही समय बाद वि. सं. 1175 में आचार्य जिनवल्लभसूरि के पट्टधर प्रथम दादा गुरुदेव आचार्य श्री जिनदत्तसूरि विहार करते हुए पद्मावती नगर में पधारे। समन्दसी ने अपना गुरु ज्ञात कर सपरिवार वंदना की।

विनंती की कि हे गुरुदेव! धर्म के प्रताप से मेरे जीवन का सारा दु:ख नष्ट हुआ है। इस भव में सुखी हुआ हूँ। पर भव में भी मैं सुखी बनूं, वैसा उपाय बतावें।

गुरुदेव ने उसे सपरिवार जिनधर्म स्वीकार करने को कहा। परमात्मा का शुद्ध धर्म जान कर उसे धारण करो। सच्चे श्रावक बनो।

समन्दसी ने गुरुदेवश्री से वासचूर्ण लेकर श्रावकत्व स्वीकार किया। चूंकि वह समुद्र के मार्ग से व्यापार करता था, इस कारण गुरुदेव ने उन्हें समदरिया/समदडिया गोत्र प्रदान किया।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

संवेग रंगशाला
श्री जिनचन्द्रसूरि का महान् आराधना शास्त्र

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

'संवेग रंगशाला' जैसा कि उसका नाम है, वास्तव में वह 'यथा नाम तथा गुण है।' यह नाम दो शब्दों से बना है। संवेग + रंगशाला।

सम्- उपसर्गपूर्वक विज् धातु से अच् प्रत्यय होकर 'संवेग' शब्द बना है। संवेग का अर्थ है मोक्ष के प्रति तड़फ, मोक्ष पाने की प्रबल उत्कंठा, मोक्ष न मिलने का प्रबल दु:ख। इस प्रकार संवेग एक मानसिक परिणाम है। इसकी स्थिति में मन का रुझान संसार के प्रति एकदम रूखा, उपेक्षा का होता है। संवेग की स्थिति में मन हर वक्त मोक्ष पाने को लालायित रहता है। सांसारिक सुख उसे असार लगते हैं। संसार के सर्वश्रेष्ठ सुखों को भी वह मोक्ष सुख की अपेक्षा सर्वथा घटिया मानता है... हीन मानता है। उसकी नजरों में मोक्ष का सुख ही सर्वश्रेष्ठ है, सर्वाधिक सुपीरिअर है। मोक्ष की प्राप्ति के बिना उसे चैन नहीं पड़ती।

रंगशाला नाट्यभूमि को कहते हैं। जहां पात्र अभिनय करते हैं। यह दो प्रकार की है। एक संसार रंगशाला, दूसरी संवेग रंगशाला।

अनादिकाल से आत्मा संसार रूपी रंगशाला का पात्र बना हुआ है। आत्मज्ञान के अभाव में उसकी दृष्टि सदा संसार-लक्षी रही। उसका सारा चिन्तन बहिर्मुखी रहा। उसका सारा क्रिया-कलाप वैषयिक सुख को उद्देश्य बनाकर होता रहा। आत्मा सांसारिक सुखों के पीछे इतना पागल बना रहा कि उसे पुण्य-पाप, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, हित-अहित का कोई विवेक नहीं रहा। इच्छापूर्ति के लिये हिंसा, झूठ, चोरी, दुराचार आदि जो भी करना पड़ा बड़े चाव से करता रहा। फलत: किये गये कर्मों का बंधन होता रहा। उन्हें भोगने के लिए चार गति एवं चौरासी लाख जीवयोनि में नये-नये जन्मों को धारण करता रहा। कर्म-बंधन एवं भोग की यह प्रक्रिया अनन्तकाल से चली आ रही है। तब तक चलती रहेगी जब तक कि इस जीव को जीव का बोध नहीं हो जाता। उसकी दृष्टि, उसका चिन्तन और उसका सारा क्रिया-कलाप आत्मानुलक्षी नहीं बन जाता। उसका सारा प्रयास कर्म तोड़ने की ओर नहीं मुड़ जाता।

संसार में भटकते-भटकते पुण्ययोग से सत्संग का सुयोग मिलता है, सत्संग श्रद्धा एवं आचरण का विषय बनता है तब संसार रंगशाला का अभिनेता 'जीव', संवेग रंगशाला का अभिनेता बन जाता है। फिर उसके अभिनय की दिशा... अभिनय की शैली एवं अभिनय का सारा आधार ही बदल जाता है। फिर उसका अभिनय मोह से प्रेरित नहीं होता ज्ञान और विवेक से पूर्ण होता है। उसके क्रिया-कलाप आत्मनियमित होते हैं। जो वैषयिक सुख उसे पागल बनाते थे अब वे उसे तुच्छ और असार प्रतीत होते हैं। उनका सारा आकर्षण समाप्त हो जाता है। भौतिक सुख-साधनों का खोजी आत्मा मोक्ष-सुख को पाने में प्रयत्नशील बन जाता है। बस वही संवेग-रंगशाला का अभिनेता है।

संवेग की महिमा-

संवेग का अर्थ है मोक्ष की उत्कट अभिलाषा। संसार से मुक्त होकर आत्मस्वरूप को पाने की तीव्र अभीप्सा। योगशास्त्र की टीका में संवेग का अर्थ करते हुए लिखा है- 'संवेगो मोक्षाभिलाष:'। संवेग के बिना तप-जप-संयम की आराधना में जो तीव्रता आनी चाहिये, जो वेग और गति आनी चाहिये वह आ नहीं सकती। मानव स्वभाव ही ऐसा है कि लक्ष्य के निर्णय बिना संकल्प दृढ़ नहीं बनता। व्यक्ति के सामने लक्ष्य रहता है तो उसकी क्रियाओं में गति आ जाती है। साथ ही क्रिया करने में रस पैदा होता है, आनन्द आता है। क्रियाओं के साथ मन जुड़ा रहता है। हार्दिक लगाव रहता है। क्रिया करने में मन थकता या ऊबता नहीं है। अन्यथा मन थककर भटक जाता है। कहा है- 'क्रिया में कितनी भी उत्कृष्टता क्यों न हो, संयम का पालन कितना भी कठिन क्यों न हो, ज्ञानाभ्यास भी दीर्घ काल तक क्यों न किया हो, यदि

आत्मा में संवेग रस प्रकट नहीं हुआ तो सब निष्फल है।' जैसे भोजन को सरस बनाने वाला लवण है वैसे सारी क्रियाओं को रसमय बनाने वाला संवेग रस है।

जिस आत्मा में संवेग रस प्रकट हो गया है उसका संवेग रस निरन्तर बढ़ता रहे तथा जिनमें यह रस प्रकट नहीं हुआ हो, उनमें प्रकट हो जाय इसी उद्देश्य से इस ग्रन्थ की रचना की गई है। इसमें जो आराधना का क्रम और प्रकार बताया गया है उसको उसी रूप में उसी भाव से करने से ग्रन्थकार का विश्वास है कि आराधक-आत्मा में अवश्य ही संवेग रस प्रकट हो जाता है... फूट पड़ता है।

ग्रन्थकर्त्ता

इस महाग्रन्थ के कर्त्ता परम पूज्य महाउपकारी आचार्य देव श्री जिनचन्द्रसूरिजी महाराज हैं। उनका परिचय इसी ग्रन्थ की प्रशस्ति में संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट रूप से मिलता है। आचार्य जिनचन्द्रसूरिजी खरतरविरुद धारक, सुविहित मार्ग प्ररूपक श्री जिनेश्वरसूरि के प्रथम शिष्य थे। नवांगी टीकाकार परम गीतार्थ आचार्य श्री अभयदेवसूरि इनके छोटे गुरुभाई थे। उनके आग्रह के कारण ही इन्होंने इस महान आराधना शास्त्र की रचना की।

आचार्य जिनचन्द्र सूरि का जन्म कहाँ और कब हुआ?उनके माता-पिता कौन थे?वे किस जाति के थे?इन्होंने शासन प्रभावना के क्या-क्या कार्य किये?इन सब बातों के विषय में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

श्री देवाचार्य विरचित कथारत्नकोष की प्रशस्ति के अनुसार आचार्य जिनचन्द्रसूरिजी, जिनेश्वरसूरि के लघुभ्राता बुद्धिसागरसूरि के शिष्य थे। इनको 18 नाममालायें सार्थ कंठस्थ थी। आपकी प्रतिभा अत्यन्त विकसित थी। आपकी भाषा गम्भीर, अलंकारिक एवं काव्य सौष्ठव से परिपूर्ण है। संवेग रंगशाला के अतिरिक्त पंच परमेष्ठी नमस्कार फल कुलक, क्षपक शिक्षा प्रकरण, जीव विभत्ति, आराधना, पार्श्वस्तोत्र आदि आपकी रचनाएं हैं।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि जी की अलौकिक प्रतिभा एवं विद्वत्ता का परिचय देने के लिये एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा। जावालिपूर (जालोर) में 'चीइवंदणमावस्सय' आदि गाथाओं पर प्रवचन देते हुए उन्होंने जो सैद्धांतिक संवाद प्रस्तुत किये थे, तीन सौ श्लोक प्रमाण दिनचर्या नामक ग्रन्थ उसी का प्रतिफल है। जो श्रावकों के लिये कर्त्तव्य-बोध की दृष्टि से महान् उपकारी है। उनकी विशिष्ट प्रभावकता के कारण ही खरतरगच्छ में चौथे पट्टधर का नाम जिनचन्द्रसूरि रखने की परम्परा सुदीर्घ काल तक प्रचलित थी।

ग्रन्थ रचना

इस ग्रन्थ की रचना नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिजी की प्रेरणा से हुई। ग्रन्थ का समापन वि. सं. 1125 में छत्रावली नगरी के सेठ पासनाग के भवन में हुआ। ग्रन्थ रचना में सहायक के रूप में श्रेष्ठि अज्जनाग के पुत्र सिद्ध और वीर नामक पुत्रों का नाम उल्लेखनीय है।

स्वयं ग्रन्थकार ने प्रशस्ति में इनके नाम का उल्लेख बड़े आदरपूर्वक किया है। इसे पुस्तक का रूप सर्वप्रथम ग्रन्थकार के शिष्य जिनदत्तगणि ने दिया। कुल मिलाकर इस ग्रन्थ में दस हजार तिरेपन श्लोक हैं। इस महाग्रन्थ का संस्कार-परिष्कार ग्रन्थकार के शिष्यरत्न श्री प्रसन्नचन्द्रसूरि की अभ्यर्थना से महावीरचरित के रचनाकार गुणचन्द्रगणि ने किया था। इसके संशोधक हैं जिनवल्लभगणि। इस ग्रन्थ का महत्व इस बात से और अधिक बढ़ जाता है कि इस कृति का संस्मरण अनेक गणमान्य महापुरुषों ने अपने-अपने ग्रन्थ में बड़े ही आदर से किया है।

1. श्री गुणचन्द्र गणि ने वि. संवत् 1139 में निर्मित प्राकृत महावीरचरियं में इस ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुए कहा है कि-

संवेगरंगसाला न केवलं कव्वविरयणा जेण।
भव्वजणविम्हयकरी विहिया संजम-पवित्ती वि।।

श्री जिनचन्द्रसूरि ने संवेग रंगशाला काव्य की रचना

ही नहीं की अपितु भव्यजनों को आश्चर्यमुग्ध करानेवाली संयम-प्रवृत्ति का पूर्ण विधान बताया।

2. विक्रम की बारहवीं शताब्दी में निर्मित गणधर सार्द्धशतक में श्री जिनदत्तसूरिजी ने इस ग्रन्थ के बारे में कहा है-

संवेगरंगसाला विसालसालोवमा कया जेण।
रागाइवेरिभयभीय-भव्वजणरक्खण-निमित्तं।।

राग, द्वेष आदि आत्म-शत्रुओं से भयभीत सर्व प्राणियों की रक्षा के लिए जिनचन्द्रसूरिजी ने विशाल किले के समान संवेग रंगशाला की रचना की।

3. विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में श्री जिनपतिसूरिजी द्वारा रचित पचलिंगी विवरण में कहा है-

नर्तयितुं संवेगं पुनर्नृणां लुप्तनृत्यमिव कलिना।
संवेगरङ्गशाला येन विशाला व्यरचि रुचिरा।।

कलिकाल के कारण जिसका नृत्य लुप्त हो गया, उस संवेग रस का पुनः नृत्य प्रारम्भ कराने हेतु विशाल मनोहर संवेगरंगशाला रची गयी।

4. विक्रम संवत् 1295 में सुमतिगणि द्वारा रचित गणधरसार्द्धशतक की वृहद्वृत्ति में कहा है कि जिसने मोक्ष रूपी महल में जाने के लिये सीढ़ियों के जैसी दस हजार श्लोक प्रमाण संवेगरंगशाला की रचना की।

'पश्चाज्जिनचन्द्रसूरिवर आसीद् यस्याष्टादशनाममाला सूत्रतोऽर्थतश्च मनस्यासन् सर्वशास्त्रविदः। येन दशसहस्रप्रमाणा संवेगरंगशाला मोक्षप्रासादपदवी भव्यजन्तूनां कृता।

5. रिक्त संघपुर जैन मन्दिर के विक्रम संवत् 1326 के शिलालेख में भी इस ग्रन्थ के नाम का उल्लेख है-

संवेगरंगशाला सुरभिः सुरविटपि-कुसुममालेव।
शुचिसरसाऽमरसरिदिव यस्य कृतिर्जयति कीर्त्तिरिव।।

संवेग रंगशाला सुगन्धि कल्पवृक्ष की कुसुम-माला की तरह, पवित्र गंगा नदी की तरह और ग्रन्थकार की कीर्ति जैसी जयवती है।

6-7. इस प्रकार वि. संवत् 1312 में चन्द्रतिलक उपाध्याय रचित अभयकुमार चरित्र में इस ग्रन्थ विषयक दो पद मिलते हैं, वैसे ही राजग्रही में पन्द्रहवीं शताब्दी के एक शिलालेख में संवेग रंगशाला का संस्मरण मिलता है।

आराधना की संकल्पना

यह आराधना शास्त्र मुख्य रूप से अन्तिम आराधना से संबंधित है। मृत्यु महोत्सव बनाने की प्रक्रिया का दर्शक है। समाधिपूर्वक मृत्यु-लाभ ही सम्पूर्ण जीवन की आराधना का सार है। कहा है- 'अन्त भला सो सब भला।' इस आराधना शास्त्र में आराधना में उन क्रिया-कलापों की भेद-प्रभेद सह चर्चा की जायेगी। जिससे आत्मा शुद्ध श्रद्धान संवेग रस से भावित बनकर आराधना के लिये कृत संकल्प बने। ज्ञानपूर्वक ममत्व का नाश करता हुआ आराधक बनकर अन्त में समाधि को प्राप्त करें। (लाभ करें)।

यह महान् ग्रन्थ मुख्य चार भागों में विभाजित किया है।

1. परिकर्म विधान,
2. परगण संक्रमण,
3. ममत्व व्युच्छेद,
4. समाधि लाभ।

1. परिकर्म विधान-

आराधना के लिये आवश्यक है कि सर्वप्रथम आत्मा को आराधना के लिये तैयार किया जाय, योग्य बनाया जाय, अभ्यस्त किया जाय। अन्यथा आराधक जीवन की सफलता संभव नहीं। अनभ्यस्त आत्मा कष्टों से घबराकर बीच से ही लौट जाता है। आत्मा को भावित कैसे किया जाये?इसके उपाय बताये गये हैं। इसमें 15 अन्तर्द्वार हैं। जो आत्मा को आराधना योग्य बनाने में सहयोगी बनते हैं। 1. अर्ह-द्वार 2. लिंगद्वार 3. शिक्षा 4. विनय 5. समाधि 6. मनोनुशास्ति 7. अनियतविहार 8. राज 9. परिणाम (साधारण द्रव्य के 10

विनियोग स्थान) 10. त्याग 11. मरण विभक्ति (17 प्रकार के मरण पर विचार) 12. अधिगत (पण्डित) मरण 13. श्रेणी 14. भावना 15. संलेखना। इन अन्तर्द्वारों का भी सदृष्टान्त वर्णन हैं।

2. परगण संक्रमण-

परगण संक्रमण के दो अर्थ हैं- 1. अपने गण को दूसरे के हाथों सौंपना तथा 2. स्वयं आराधना हेतु दूसरे गण में संक्रमण करना।

आराधना करने के इच्छुक मुनि या आचार्य अपने शिष्य समुदाय या गच्छ को सुयोग्य हाथों में सौंपे बिना आराधना में न लगे। प्रथम तो स्वसमुदाय या स्वगच्छ के सुयोग्य व्यक्ति को ही आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करें। नहीं मिले तो अन्य गच्छ के सुयोग्य व्यक्ति को आचार्य पद देकर अपना गण उसे समर्पित करें फिर आराधना करने हेतु सुयोग्य गुरु की गवेषणा से संबंधित 10 द्वार है। 1. दिशा 2. क्षामणा 3. अनुशास्ति 4. परगण गवेषणा 5. सुस्थित गुरु गवेषणा 6. उपसंपदा 7. परीक्षा 8. प्रतिलेखना 9. पृच्छा 10. प्रतिपृच्छा। इन अन्तर्द्वारों से परगण संक्रमण की विधि पूर्ण होती है।

3. ममत्वव्युच्छेद-

ममत्व त्याग के बिना आराधना नहीं हो सकती अत: आराधना के लिये आवश्यक है कि सभी प्रकार का ममत्व हमारी आत्मा से दूर हो। इसके लिये उपायों की आवश्यकता है। जिन्हें अपनाने से ममत्व विच्छेद हो सकता है। इसके सहयोगी 9 द्वार हैं। 1. आलोचना 2. शय्या 3. संस्तारक 4. निर्यामक 5. दर्शन 6. हानि 7. प्रत्याख्यान 8. क्षमापना 9. क्षमा। इन्हें विविध उदाहरणों से समझाया गया है।

4. समाधि लाभ-

आराधना का लक्ष्य है समाधि मरण। क्षपक मुनि समाधि के बिना समाधिमरण रूप लक्ष्य की सिद्धि नहीं कर सकता। अत: इस द्वार में समाधि लाभ के आवश्यक उपाय बताये गए हैं। इसके 9 अर्न्तद्वार है। 1. अनुशास्ति 2. प्रतिपत्ति 3. स्मारणा 4. कवच 5. समता 6. ध्यान 7. लेश्या 8. आराधना का फल तथा 9. शरीर का त्याग।

अन्त में 28 गाथा में ग्रन्थकार ने अपनी परम्परा, रचना काल, रचना स्थान, संशोधक, परिष्कारक, सहायक एवं प्रेरक आदि सभी का नामोल्लेख कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की है। विक्रम संवत् 1125 में निर्मित यह अनुपम आराधना शास्त्र 900 वर्षों के बाद सर्वप्रथम खरतरगच्छीय आचार्यदेव श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के सदुपदेश से जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार, सूरत से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अपूर्ण था। उसके बाद सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन पू. विजयमनोहरसूरिजी म. के शिष्याणु परम तपस्वी हेमेन्द्रविजयजी और बाबूभाई सवचन्द के सत्प्रयत्न से वि.सं. 2025 में बम्बई से प्रकाशित हुआ। उक्त संस्करण के लिये विचारणीय बात यह है कि इस प्रकाशन में आगे और पीछे, दोनों जगह कर्त्ता के नाम के साथ तपागच्छीय विशेषण जोड़ा है। यह संपादक की अज्ञानता का परिचायक है क्योंकि ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की प्रशस्ति में अपनी परम्परा का जो उल्लेख किया है उसमें स्पष्ट हो जाता है कि 'तपागच्छीय' विशेषण यहाँ घट नहीं सकता। कारण ग्रन्थ का समापन वि.सं. 1125 में हुआ था जब कि तपागच्छ का प्रादुर्भाव इसकी रचना के डेढ़ सौ वर्ष बाद हुआ। तपागच्छ की प्रसिद्धि वि.सं. 1285 में आचार्य जगच्चन्द्रसूरि से है और इस ग्रन्थ की रचना वि.सं. 1125 में अर्थात् तपाविरुद की प्राप्ति से करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हुई थी। हां ग्रन्थकार ने अपनी प्रशस्ति में जिस परंपरा का वर्णन किया है, वह खरतरगच्छीय परम्परा है। क्योंकि खरतरगच्छ की प्रसिद्धि जिनेश्वर सूरि से है। आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी ने, उस समय में प्रचलित चैत्यवास परंपरा के विरोध में अपनी आवाज बुलन्द की थी। दुर्लभराज की राजसभा में चैत्यवास के प्रबल समर्थक सूराचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त कर खरतरविरुद प्राप्त किया। बाद में उनका अनुगामी समुदाय खरतरगच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। श्री जिनेश्वरसूरिजी के खरतरविरुद प्राप्ति का विवरण गणधर सार्द्ध शतक,

अपभ्रंशकाव्यत्रयी आदि अनेक ग्रन्थों एवं टीकाओं में उपलब्ध होता है।

प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरिजी म. रचित गुरुपारतन्त्र्य में इसका स्पष्ट विवरण मिलता है-

पुरओ दुल्लहमहिवल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं।
मुक्का विआरिउणं, सीहेण व दव्वलिंगिगया।।

कई तपागच्छीय आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में जिनेश्वरसूरि को खरतरगच्छीय कहा है-

पुरा श्री पत्तने राज्ये, कुर्वाण भीमभूपतौ।
अभुवन् भूतले ख्याता: श्री जिनेश्वर सूरय:।।
सूरयोऽभयदेवाख्यास्तेषां पट्टे दीदीपिरे।
येभ्य: प्रतिष्ठामापन्नो, गच्छ: खरतराभिध:।।

इससे आचार्यप्रवर श्री जिनेश्वरसूरिजी की विजय स्पष्ट सूचित होती है। ग्रन्थकार द्वारा वर्णित परम्परा खरतरगच्छ के सिवाय अन्य किसी भी परम्परा से मेल नहीं खाती। अत: ग्रन्थकार ने 'खरतरगच्छीय' विशेषण नहीं भी दिया फिर भी अन्य प्रमाणों से उनका खरतरगच्छीय होना निर्विवाद है। पूर्वोक्त ग्रन्थ की गुजराती प्रस्तावना में आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी को समर्थ तार्किक 'सन्मति तर्क टीकाकार' अभयदेवसूरिजी का गुरुभाई बताया वह अनुचित है। इसकी प्रशस्ति से स्पष्ट हो जाता है कि वे 'नवांगी टीकाकार' अभयदेवसूरि के गुरुभाई थे। उनकी अभ्यर्थना से ही उन्होंने इस ग्रन्थ की रचना की।

इसी प्रकार इस ग्रन्थ का संपादन त्रिस्तुतिक आचार्य श्री जयानंदसूरिजी म. ने किया है, जिसका प्रकाशन श्री गुरु रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ में उन्होंने भी आचार्य जिनचन्द्र सूरि को तपागच्छी य बतलाया है, जो कि सर्वथा ऐतिह्य तथ्यों के विपरीत है।

इस ग्रन्थ का नाम आराधना शास्त्र सार्थक है। आत्मा को भावित कर... संयम आराधना से लेकर अन्तिम आराधना तक ज्ञानात्मक और क्रियात्मक पक्ष बड़े ही मार्मिक ढंग से उजागर किये हैं। आराधना का इससे अधिक विस्तृत और व्यापक वर्णन, सरल व सम्पूर्ण वर्णन अन्यत्र कहीं नहीं है। निर्दिष्ट विषयों के अतिरिक्त प्रासंगिक अन्य अनेक उपयोगी विषयों का इसमें वर्णन हैं। इस दृष्टि से यह वास्तव में महाकाव्य है। इसके कई विषय ऐसे हैं जिनकी अलग से चर्चा की जाये तो वे स्वतन्त्र ग्रन्थ का आकार ले सकते हैं।

आराधना संबंधी जितने भी छोटे बड़े ग्रन्थ है, लगता है उन सभी का आधार संवेग रंगशाला है। वर्तमान में अन्तिम आराधना कराने में उपयोगी आराधना प्रकीर्णक, चउसरणपयन्ना और विनयविजयजीकृत पुण्य प्रकाश स्तवन आदि इसी ग्रन्थ के ममत्वव्युच्छेद एवं समाधि लाभ विभाग का संक्षेप है।

भाषा-शैली-

ग्रन्थ की भाषा सरल-सुबोध प्राकृत भाषा है। कहीं-कहीं 'देश्य' शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। यह रचना गाथा छन्द में हैं। शैली वर्णनात्मक है। प्रत्येक विषय का वर्णन विस्तृत है। भाषा अलंकारिक दृष्टान्त प्रधान है। प्रत्येक विषय को आगमिक कथाओं के माध्यम से समझाया गया है। भाषा भावानुकूल है।

वास्तव में इस ग्रन्थ को पढ़ते समय संवेग रस की उर्मियां हृदय में उछल पड़ती हैं। संसार के प्रति तिरस्कार एवं मुक्ति पाने की तमन्ना प्रबल हो उठती है। जीवन में होने वाले पापों के प्रति धिक्कार छूटता है। किये हुए पापों की आलोचना का प्रबल भाव बनता है साथ ही संसार से वैराग्य जगता है तथा संयम जीवन के अलौकिक आनन्द का पूर्णरूपेण अनुभव होता है।

इस ग्रन्थ का सतत् स्वाध्याय आत्म-हितकर है। इसके अधिकाधिक पठन-पाठन द्वारा सभी आत्म संवेगरस से आप्लावित बने। अपने विकारों को प्रक्षालित कर आत्म शुद्धि के भागी बनें... आत्मसुख का वरण करें।

('बीकानेर उपधान तप स्मृति ग्रन्थ' एवं 'जिनेश्वर' पत्रिका से आंशिक संशोधनसह साभार।)

पर्युषण पर्व पर
दिल से
मिच्छामि दुक्कड़ं
विगत दिनों में मेरे किसी व्यवहार से
आपका दिल दुखा हो तो उसके लिए
मैं हाथ जोड़कर आपसे क्षमा चाहता हूँ

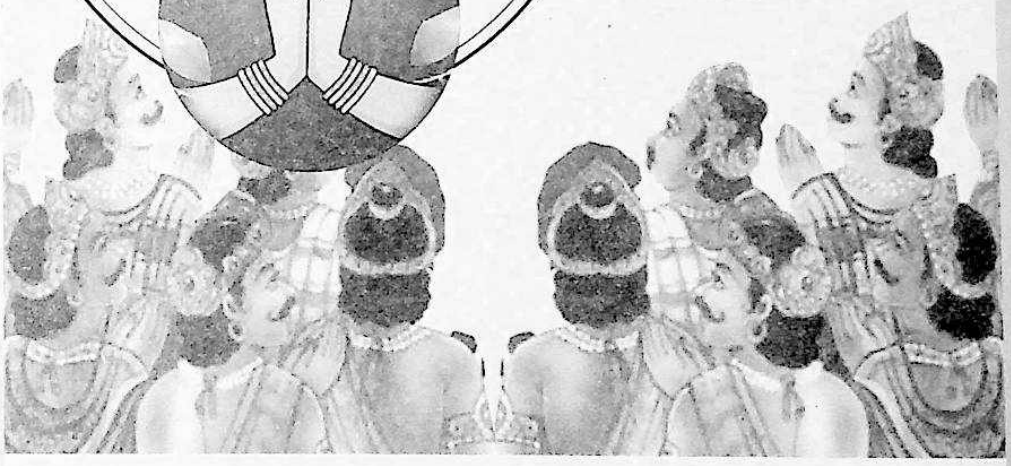

शा. रतनचंद प्रकाशचंद चौपड़ा

बिलाडा–हैदराबाद

खरतरगच्छ का राजाओं से सम्बन्ध

-महोपाध्याय विनयसागरजी

शास्त्रों में विशिष्ट व्यक्तित्व एवं गुणधारक आचार्यों को प्रभावक शब्द से संबोधित किया गया है। प्रभावक आचार्य आठ प्रकार के बतलाए गये हैं:- प्रावचनिक, धर्मकथा प्ररूपक, वादी, नैमित्तिक, तपस्वी, विद्याधारक, सिद्धिधारक और कवि। शासन प्रभावक आचार्य उपरोक्त किसी भी गुणसिद्धि को प्रमुखता देते हुए शासन की रक्षा के लिए, शासन के उत्कर्ष के लिए, शासन की प्रभावना के लिए प्रयोग करते हैं। किसी भी देश के राजा को अपने धर्म का अनुयायी बनाकर शासन प्रभावना इनका मुख्य लक्ष्य रहता है। किसी को पूर्णत: अपना अनुयायी बना लेना, किसी के साथ गाढ़ मधुर सम्बन्ध रखते हुए उनको प्रभावित कर तीर्थों और संघों के उपद्रवों को दूर करना, फरमान प्राप्त करना और किसी के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने समाज को सुरक्षित रखना। 'यथा राजा तथा प्रजा' के न्याय के अनुसार प्रजा राजा का ही अनुकरण करती है और राजा द्वारा स्वीकृत या सम्मानित धर्म ही प्रजा का धर्म हो जाता है। अत: यह आवश्यक होता है कि अपने व्यक्तित्व, कृतित्व और चमत्कारिकता से किसी भी नरेश को प्रतिबोध देकर धार्मिक कार्य कराये जाएं। पूर्व- परम्परा का अनुसरण करते हुए खरतरगच्छाचार्यों ने भी इस ओर पहल की और न केवल गच्छ के अभ्युदय को अपितु शासन के अभ्युदय को भी प्रखरता से बढ़ाया। इतिहास में इस सम्बन्ध में जो भी उल्लेख मिलते हैं उनमें से कतिपय उल्लेख (अगस्त 2019 के अंक से जारी) निम्न हैं:-

卐 बाहड़मेर नरेश राणा शिखरसिंह-

सं० १३९१ में श्री जिनपद्मसूरिजी वाग्भटमेरु पधारे। उस समय चौहानकुलप्रदीप राणा शिखरसिंह, राजपुरुष व नागरिकजनों के साथ सूरिजी के सन्मुख गये और महोत्सवपूर्वक उनका नगरप्रवेश कराया।

卐 सांचोर (सत्यपुर) का राणा हरिपालदेव-

सं० १३९१ में श्री जिनपद्मसूरिजी बाहड़मेर से सत्यपुर पधारे उस समय राणा हरिपालदेव आदि उनके स्वागतार्थ सन्मुख गये।

卐 आशोटा का राजा उदयसिंह-

सं० १३९३ में पाटण से नारउद्र होते हुए श्री जिनपद्मसूरिजी आशोटा पधारे। उस समय वहाँ का राजा रुद्रनन्दन, राज० गोधा सामन्तसिंहादि के साथ स्वागतार्थ पूज्यश्री के सन्मुख आया।

卐 बूजद्री का राजा उदयसिंह-

सं० १३९३ में श्री जिनपद्मसूरिजी बूजद्री पधारे। वहाँ सुश्रावक मोखदेव ने राजा उदयसिंह एवं समस्त नागरिकों के साथ सूरिजी का बड़े समारोह से नगर प्रवेश कराया। इसके बाद अन्यत्र विहार करके सूरिजी फिर वहाँ पधारे तब भी राजा उदयसिंह प्रवेशोत्सव में सम्मिलित हुआ था।

卐 त्रिशृङ्गम नरेश रामदेव-

सं० १३९३ में श्री जिनपद्मसूरिजी त्रिशृङ्गम पधारे। मन्त्रीश्वर सांगण के पुत्र मण्डलिकादिक ने, महाराजा महीपाल के अंगज महाराजा रामदेव की आज्ञा से राजकीय वाजित्रों के साथ बड़े समारोहपूर्वक प्रवेशोत्सव किया। सूरिजी को संघ के साथ चैत्यपरिपाटी करते समय उनकी प्रशंसा सुन कर महाराजा के चित्त में उनके दर्शन की उत्कण्ठा जागृत हुई। महाराजा के अनुरोध पर सूरिजी राजसभा में पधारे।

नृपति ने उन्हें आते देख कर, राजसिंहासन से नीचे उतर कर, उनकी चरणवन्दना की। पूज्यश्री आशीर्वाद दे कर चौकी पर विराजे। महाराजा सारङ्गदेव के व्यास ने अपनी रचना पढ़ कर सुनाई, जिसमें श्री लब्धिनिधान उपाध्यायजी ने

कई त्रुटियां बतलाईं। महाराजा रामदेव कहने लगे- 'उपाध्यायजी का वचनचातुर्य और शास्त्रीय ज्ञान असाधारण है। इन्होंने तो हमारे व्यासजी की त्रुटियाँ बतलाई।' इसी प्रकार अन्य सभासदों ने उपाध्यायजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

卐 महामन्त्री वस्तुपाल का उल्लेख-

सं० १२८९ में श्री जिनेश्वरसूरिजी के खम्भात पधारने पर महामात्य वस्तुपाल ने बड़े समारोह से उनका नगर प्रवेशोत्सव किया था। गुर्वावली में श्री जिनकुशलसूरिजी के खम्भात पधारने पर भी इस उत्सव की याद दिलाई गई है।

卐 सुल्तान कुतुबुद्दीन-

जिनप्रभसूरि के गुणों पर वह मुग्ध था। अट्ठाही, अष्टमी, चतुर्दशी को सम्राट आपको सभा में आमंत्रित किया करता था।

卐 सम्राट मोहम्मद तुगलक-

जिनप्रभसूरि ने अपने वैदुष्य और चमत्कारों से मोहम्मद तुगलक को प्रभावित किया। सं० १३८५ में राजकीय सम्मान से दिल्ली में प्रवेश किया। सम्राट के सम्पर्क में रहने लगे। सम्राट से कई फरमान प्राप्त किए। विशेष परिचय के लिए देखें:- (महोपाध्याय विनयसागर द्वारा लिखित 'शासन प्रभावक आचार्य जिनप्रभ और उनका साहित्य')।

卐 जेसलमेर का महारावल लक्ष्मण-

जिनवर्द्धनसूरि के ये परम भक्त थे। और इन्हीं की उपस्थिति में जेसलमेर के पार्श्वनाथ मंदिर की सं० १४६९ में प्रतिष्ठा हुई थी। प्रशस्तियों में इस मंदिर का नाम ही लक्ष्मणविहार प्राप्त होता है।

卐 महारावल वैरीसिंह-

जेसलमेर शिलालेख प्रशस्ति (खरतरगच्छ प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखाङ्क २८८) के अनुसार महारावल वैरीसिंह और त्र्यम्बकदास आदि आचार्य जिनभद्रसूरि के चरणों में नित्य प्रणाम करते थे।

卐 बादशाह सिकन्दर लोदी-

जिनहंससूरि ने संवत् १५५६ में इनको चमत्कार दिखाकर ५०० बन्दीजनों को कैद से छुड़वाया था और अमारी की घोषणा करवाई थी।

卐 सम्राट अकबर-

विक्रम सं० १६४८ में सम्राट अकबर के अनुरोध पर जिनचन्द्रसूरि लाहौर पधारे। उनकी धर्मदेशना अकबर नित्य सुनता था और उनको बड़े गुरु के नाम से पुकारता था। आचार्य के उपदेश से जैन तीर्थों और मंदिरों की रक्षा हेतु सम्राट से फरमान प्राप्त किया था। आषाढ़ शुक्ला नवमी से पूर्णिमा तक १२ सूबों में जीवों को अभयदान देने के लिए फरमान पत्र भी प्राप्त किए थे। काश्मीर प्रवास के समय सम्राट के अनुरोध पर आचार्य ने महिमसिंह को भी साथ भेजा था। सं० १६४९ में बड़े महोत्सव के साथ आचार्य जिनचन्द्रसूरि को युगप्रधान, महिमसिंह को आचार्य पद और समयसुन्दर और गुणविनय को वाचनाचार्य पद सम्राट ने अपने ही हाथों से दिया था। इस महोत्सव के प्रसंग पर मन्त्री कर्मचन्द्र बच्छावत ने १ करोड़ रूपये खर्च किए थे। मन्त्री कर्मचन्द्र, बीकानेर नरेश महाराज रायसिंह और सम्राट अकबर के पूर्ण प्रीतिपात्र थे। कर्मचन्द्र के सुकृत्यों का वर्णन महोपाध्याय जयसोम ने कर्मचन्द्र वंश प्रबन्ध में किया है।

卐 सम्राट जहांगीर-

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि का भक्त था। सम्राट जहांगीर ने ही वाचनाचार्य गुणविनयोपाध्याय को 'कविराज' पद से अलंकृत किया था।

卐 नगरकोट के महाराजा-

महोपाध्याय जयसागर जी के उपदेश से प्रतिबुद्ध हुए थे।

卐 जेसलमेर का राजवंश-

महारावल लक्ष्मणदेव से प्रारम्भ कर उनकी वंश परम्परा खरतरगच्छ, बेगड़गच्छ की परम भक्त रही है। हर प्रतिष्ठा आदि विशेष कार्यों में इस वंश के महारावल सम्मिलित होते थे और राज्योचित सहयोग प्रदान करते रहे।

卐 बीकानेर का राजवंश-

महाराजा रायसिंहजी और उनके वंशज खरतरगच्छ एवं आचार्यशाखा के आचार्यों को अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते थे। उनके पद-प्रतिष्ठादि अवसरों पर राजकीय निशान आदि भी प्रदान करते थे। युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजी से लेकर जिनचारित्रसूरिजी तक इस वंश का सम्बन्ध घनिष्ठतर रहा।

卐 जोधपुर का राजवंश-

इस वंश के राजागण भी खरतरगच्छ के आचार्यों को परम आदरणीय मानकर उनके प्रत्येक कार्यों में भाग लेते थे। जिनमहेन्द्रसूरि का पदाभिषेक राजा मानसिंह ने ही किया था।

कुछ विशिष्ट पत्रों के आधार पर बाबा ज्ञानसारजी का सम्बन्ध सवाई प्रतापसिंह, जयपुर, बीकानेर नरेश सुरतसिंहजी, किशनगढ़ नरेश आदि से भी व्यक्तिगत सम्बन्ध रहे। महोपाध्याय क्षमाकल्याणजी का भी तत्कालीन जेसलमेर नरेश से निकट का सम्बन्ध रहा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राजागणों को उपदेश देकर खरतरगच्छ के अनेक आचार्यों ने शासन और धर्म की महती प्रभावना की है।

('खरतरगच्छ साहित्य कोश' पुस्तक के प्राक्कथन से आंशिक संशोधन सह साभार)

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित

नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय एवं मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिए

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से दिनांक 15 नवम्बर 2017 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई है। ऐसे भव्य जिनालय एवं दादाबाड़ी के दर्शनार्थ सपरिवार पधारकर यात्रा का लाभ लेवें।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित दादाबाड़ी में साधु-साध्वीयों के लिये आराधना हॉल बनाया गया है एवं आधुनिक धर्मशाला में 4 कमरें वातानुकूलित बनाये गये हैं तथा डोरमेट्रीमय 20 पलंग की सुविधा उपलब्ध है। सर्व सुविधायुक्त भोजनशाला चालू है।

यहां पधारने के लिये बीकानेर तथा फलोदी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर-फलोदी-बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Executive Trustee
Shri padamji Tatia
Mob. 9840842148

मुनीमजी : प्रशान्त शर्मा
श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305, (जि.बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635 पेढ़ी, 9001426345 मुनीमजी

नवकार मेरी सांस है,
जैन धर्म मेरा विश्वास है,
गुरुदेव मेरे प्राण है,
मोक्ष की मुझे तलाश है,
क्षमा पर्व पर
उत्तम क्षमा
मिच्छामि दुक्कड़ं

शा. इन्द्रमलजी गौतमचंद महावीरचंद
सुरेश कुमार चौपड़ा

बिलाड़ा-हैदराबाद

प्रेरक
कथा

जिनराज के दर्शन से अनेक लाभ

प्रस्तुति – कैलाश बी. संकलेचा

जिन परमात्मा के दर्शन से अनेक लाभ है जिनमें से कुछ इस प्रकार है।

१:- जिनमंदिर में जाने का विचार मन में आने पर एक उपवास का फल मिलता है। जिनेश्वर परमात्मा के मंदिर की ओर चलने पर बेले की तपस्या का लाभ मिलता है। दर्शन करने से एक मास की तपस्या का लाभ मिलता है। पूजा करने से एक हजार वर्ष की तपस्या का फल मिलता है। तथा स्तुति इत्यादि से अनंतगुणा फल मिलता है। परमात्मा की भक्ति से रावण, श्रेणिक, कृष्णजी आदि ने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया है। अत: मंदिर में जाने से भी प्रभु भक्ति के द्वारा तप तथा पुण्य का उपार्जन होता है।

२:- परमात्मा की अंग पूजा करने से समस्त विघ्न शांत होते है अग्र पूजा से सुखों की प्राप्ति होती है। तथा भाव पूजा से मोक्ष पद की प्राप्ति होती है। श्रद्धायुक्त सविधि पूजा करने से जीव सुख तथा स्वर्ग आदि की प्राप्ति करके अंत मे मोक्ष प्राप्त करता है क्योंकि पूजा से मानसिक शांति प्राप्त होती है, तदनंतर शुभ ध्यान होता है तथा शुभ ध्यान से मोक्ष मिलता है।

३:- मंदिरजी में 'जय वीयराय' पढते समय 'लोग विरुद्धच्चाओ' आदि शब्द आते है अर्थात् लोक-विरुद्ध क्रियाओं का त्याग, गुरुजनों की पूजा, परोपकार आदि करूंगा, ऐसी भावना मन में आने से अपने दुष्कृत्यों पर पश्चाताप होता है। तथा आगे से पाप न करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। स्वयं को लज्जा आने लगती है अपने मस्तक पर चंदन का तिलक लगाते समय यह भाव उत्पन्न होते है कि वीतराग परमात्मा की आज्ञा को शिरोधार्य करता हूँ इस प्रकार प्रभु दर्शन से हृदय पाप-भीरु बनता है तथा बदलना शुरु हो जाता है।

४:- मंदिर जी में जाने से शुद्ध वातावरण मिलता है जिससे वहा रहने तक मन मे पाप के विचार नहीं आते है शुद्ध वातावरण के कारण मन भक्ति में लगता है। शुभ विचार आते है तब मन धर्म-ध्यान में लीन होता है। जब तक मन्दिर में रहते है तब तक प्राणी अठारह पाप-स्थानों से बचा रहता है, दुर्गुण दूर होकर सद्गुणों की प्राप्ति होती है।

५:- परमात्म-प्रतिमा की शांत मुद्रा देखकर मन में विचार आता है कि परमात्मा बारह गुणों से युक्त तथा अठारह दुषणों से रहित है इस प्रकार उनके दर्शन व स्मरण से उनके गुण हृदय में चित्रित हो जाते है तथा उनके समान बनने की भावना मन में प्रकट होती है।

६:- परमात्म-प्रतिमा के दर्शन से सम्यग्दर्शन निर्मल होता है। दान, शील आदि की तरह जिन-दर्शन भी कर्म-क्षय में सहायक है तथा आत्मा को दुर्गति में जाने से रोक कर क्रमश: मोक्ष की प्राप्ति करवाता है।

अत: सुज्ञजनों को चाहिए कि वे नित्य परमात्म-दर्शन, सेवा पूजा आदि कर्तव्य अवश्य करें।

जो व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहता है वही जीवन का आनन्द प्राप्त करता है। जीवन के प्रति सजगता आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। सजगता के अभाव में दुर्घटना की आशंका रहती है। जीवन अनमोल है इसे जीवन्त जीने के लिये स्वार्थों का विसर्जन और प्राणी मात्र की सेवा का समाकर्षण अनिवार्य है।

–आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.

शा. रिखबराज-सौ. श्रीमती रतन,

पुत्र : संजय-सौ. विनीता अनिल-सौ. शोभा

रोहिल निखिल आदित्य इशान

भंसाली परिवार

जोधपुर

हैदराबाद—अमेरिका

धारावाहिक
कथा
10

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवरानी कमलावती अपने कक्ष में भोजन से निवृत्त होकर विश्राम कर रही थी। वह सोने का जितना प्रयत्न कर रही थी, निद्रा उतनी ही उससे आँख मिचौली का खेल खेल रही थी। उसके विचारों का केन्द्र उसके स्वामी पुष्पचूल थे।

उसने ज्योंहि आँख मूंदकर निद्रा को बुलाने का प्रयत्न किया कि उसकी आँखों में पुष्पचूल की भव्य आकृति उभर आई। उसने अपने प्राणदेवता को संबोधित करते हुए कहा-युवराज! आकृति और प्रकृति दोनों का आपमें कितना सुंदर सामंजस्य हुआ है। आपका सौन्दर्य आँखों को गहरा सुकून देता है। आपकी आँखों का भोलापन किसी को भी अपना बना सकता है। मैं जब से आपकी अर्धांगिनी बनकर इन महलों में आयी हूँ। मैंने आपके व्यवहार की मृदुता का अनुभव किया है फिर भी ऐसा लगता है कि उसमें आपकी विवशता ज्यादा है। असलियत कम है। ऐसी कौनसी मजबूरी है जिसे आप अकेले पी रहे हैं। क्या आप मुझसे अपनी पारदर्शिता नहीं रखेंगे।

मैं अग्नि की साक्षी से आपकी पत्नी बनकर आपके जीवन में आयी हूँ। क्या मेरा दायित्व इतना ही है कि आपकी सुविधाओं और प्रसन्नता में मैं अपना भाग रखुं और आपकी दुर्बलता अथवा मन की गहराई में छिपे दर्द से अनजान और उदासीन रहूं?

स्वामी! आप मुझे अपने हृदय में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान करें और विश्वास रखें कि आपके जीवन का अमृत जितनी प्रसन्नता से मैं पीती रही हूँ विषपान में भी मेरा हृदय उतना ही आनंदित होगा। मुझे अवसर दें कि आपके सुखों की ही नहीं पीडा की भी भागीदार बनूं।

तुरंत पुष्पचूल की दूसरी आकृति प्रथम आकृति को परे धकेलकर अट्टहास बिखेरती हुई बोली- अभी तो तूंने इस महल में कदम रखा है और आते ही तूं मेरे वर्षों पुराने स्वभाव को बदलने के लिए तत्पर हो गयी है। यह नादानी तेरे सारे सपनों को चूर-चूर कर देगी। तूं मेरी और झांकना भी मत। तूं राजश्री वैभव में दिन दुनिया को भूलाकर अपनी इच्छाओं और कामनाओं को तृप्त कर।

नहीं... नहीं...! यह उचित नहीं है। अपने स्वामी की दुनिया जानना, समझना और जरूरत हो तो उसे बदलना मेरा कर्तव्य है। मेरी और मेरे स्वामी की दुनिया अलग-अलग नहीं हो सकती। मैं अपने स्वामी के जीवन में दो चेहरे नहीं रहने दूंगी। मेरे स्वामी का एक ही चेहरा होगा और वह चेहरा भी सौम्य, परहित-चिंतक, परपीडा-कातर व लोकप्रिय होगा। वह चेहरा यह सुनकर विद्रूप हो उठा। उसने उसकी भावनाओं का मखौल उडाते हुए मात्र इतना ही कहा- बिचारी!

युवरानी अपने लिए 'बिचारी' शब्द सुनकर तमतमा उठी। उसके चेहरे पर क्षत्राणी का तेज छलक उठा। उसने कहा- मैं तुम्हें बता दूंगी कि पतिव्रता नारी इस जगत में क्या नहीं कर सकती? तुमने अभी तक मात्र नारी को देखा है। उसकी शीतलता का अनुभव किया है पर, उसके हृदय की गहराई में छिपी ज्वाला का अनुभव नहीं किया है। मैं तुम्हें अपने समर्पण की चांदनी और पतिव्रता के तेज से जीतकर बता दूंगी कि मैं अबला हूँ या सबला!

मुखाकृति अदृश्य हो गयी। रह गयी अकेली युवरानी। उसका चेहरा आँसुओं से तरबतर हो उठा। वह जब से महारानी के समीप बैठकर लौटी थी, तब से निरंतर एक ही चिंतन चल रहा था कि क्या वह अपने सास-ससुर की कसौटी पर खरी उतर सकेगी?

आज दोपहर में भोजन से निवृत्त होकर ज्योंहि वह अपने महल में लौट रही थी कि महारानी ने उसे पुकार लिया था।

वह आवाज सुनकर तुरंत महारानी के पास गयी और पुछा- माँ! आपने मुझे पुकारा?

हाँ बेटी, मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ अत: मेरे साथ मेरे कक्ष में आ।

युवरानी को कुछ अटपटा लगा। आज माताजी के चेहरे पर विषाद है। विश्राम के समय मुझसे बात करना चाहती हैं। जरूर कोई आवश्यक कार्य है। इस समय तो पिताजी भी विश्राम के लिए कक्ष में पधारते हैं फिर भी माँ ने मुझे बुलाया है, जरूर कुछ अघटित हुआ है।

उसने स्वयं के आचरण की समीक्षा की। कहीं मेरे द्वारा कोई अनुचित व्यवहार तो नहीं हुआ। कहीं मैंने नादानी से राजमर्यादा का खंडन तो नहीं किया। परंतु बहुत कुछ टटोलने पर भी उसे वहीं अपने व्यवहार में त्रुटि का अहसास नहीं हुआ।

अत्यन्त संकुचित होती वह धीमे कदमों से चलती हुई महारानी के कक्ष में पहुंची। महारानी अधलेटी स्थिति में कुछ सोचती हुई नजर आयी। युवरानी को आता हुआ देखकर वह बैठ गयी और मृदु स्वर में बोली- बेटा तुम कैसी हो? तुम्हारा मन इस नये परिवेश में प्रसन्न तो है।

जी माँ! आपका वात्सल्य मेरे जीवन को सदा प्रफुल्लित रखता है। मेरे से कोई भी त्रुटि हो जाए तो मुझे इंगित करना। मैं नादान हूँ।

नहीं बेटा! तुम अत्यन्त समझदार और विनीत हो। संस्कारों की सुगंध तुम्हारे रोम-रोम से प्रस्फुटित होती है। हम तुम जैसी लावण्यमयी और कुलीन कन्या को पुत्रवधु के रूप में पाकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। बेटी! ससुराल को आर्य स्त्री का पुनर्जन्म माना गया है। वह अंकुरित कहीं होती है और महकती कहीं है। विवाह नारी जीवन का बड़ा ही विचित्र पर संस्मरणीय मोड़ है। वह अपने जन्मजात परिवेश का विस्मरण कर बड़े ही यतन से किसी अनजाने नीड पर घोंसला बनाती है। एक नारी के खिले हुए सुगन्धित जीवन पुष्प का ससुराल के विविध व्यक्तियों की माला में मधुर गुंफन का नाम है- विवाह! बहुरानी! तुम मेरी बात से ऊब तो नहीं रही हो।

नहीं माँ! आपके हर शब्द में मुझे अपना भविष्य झांकता नजर आता है। जिस समय मैंने अपने जन्मदाता माता-पिता से विदायी ली थी, उन्होंने एक ही शिक्षा दी थी कि अब वे ही तेरे हितचिन्तक और कल्याणकारी माता-पिता हैं। आप विश्वास रखे कि आपके प्रति मेरी वही आस्था है।

बेटी! आज मैंने विशिष्ट प्रयोजन से तुम्हें बुलाया है। युवराज पुष्पचूल पराक्रमी और अनुपम सौन्दर्य का मालिक है। हमनें बहुत मनौतियों के बाद उसे पाया है। हृदय का निश्छल है परंतु... !

कहिए माताजी! आप अटक क्यों गयी। बेटी! कहते हुए जुबां भारी हो रही है। शब्द गले में ही अटके रहना चाहते हैं पर, कुछ कहे बिना उपचार भी संभव नहीं है। बेटी! हम तुम्हारे गुनाहगार है। हमने जानते हुए भी तुम जैसी कोमलांगी को एक बहुत भयंकर सजा दी है, कहते हुए महारानी के होठों से सिसकी फूट पडी।

युवरानी इस अकल्पित स्थिति को देखकर विचलित हो गयी। माताजी ऐसा क्यों कह रही है? किस बात के लिए वे आहत है? आज तक तो किसी प्रकार की प्रताड़ना का अनुभव मैंने नहीं किया है। कभी-कभी युवराज के व्यवहार में दंभ अवश्य अनुभव किया है। पर कुल मिलाकर वे सुयोग्य और प्रेम के देवता है। फिर क्यों रानी माँ उनके कारण चिन्तित है।

युवरानी ने महारानी को आश्वस्त करने के लिए उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोली- माँ! आप जैसे करुणावत्सल द्वारा मेरा अहित सपने में भी संभव नहीं है।

फिर भी मेरे योग्य जो भी सेवा हो वह अवश्य कहिए। मैं अवश्य करूंगी, कहते-कहते उसके चेहरे पर तेज छलक आया।

महारानी कहने लगी- जिस प्रकार चांद में दाग है वैसे ही मेरे पुष्पचूल में कुसगंति से कुछ विकृतियां आ गयी है। उसमें चोरी करने की कुटेव है।

ज्योंहि ये शब्द युवरानी ने सुने, उसके पाँवों तले धरती ही खिसक गयी। क्या वह एक चोर की पत्नी है! क्या उसके प्राणदेवता चोरी जैसा अधम आचरण करते हैं। ओह! मेरे भाग्यदेवता! मेरी कैसी परीक्षा ले रहे हो तुम? जिसे मैंने अन्याय को रौंदने वाला व अत्याचार को मिटाने वाला रक्षक समझा था, क्या वही स्वयं अत्याचार का जनक हो सकता है? वह संज्ञा शून्य-सी हो गयी...।

(क्रमश:)

अ. भा. जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के चुनाव संपन्न

धुलिया 11 अगस्त। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में धुलिया नगर में ता. 11 अगस्त 2019 को साधारण सभा की बैठक हुई जिसमें बड़ी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता उपाध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड मुंबई ने की। सभा में श्री मोहनचंदजी ढड्ढा चेन्नई, संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर, श्री प्रकाशजी कानूगो मुंबई, श्री दीपचंदजी बाफना अहमदाबाद, श्री प्रकाशचंदजी सुराणा रायपुर, श्री सुरेशजी कांकरिया रायपुर, श्री बाबुलालजी छाजेड मुंबई, श्री द्वारकादासजी डोसी बाडमेर, श्री तिलोकचंदजी पारख रायपुर, श्री ज्ञानचंदजी कोठारी दुर्ग, श्री पदमजी टाटिया चेन्नई, श्री सुरेशजी लूणिया चेन्नई, श्री पदमजी बरडिया दुर्ग, श्री रतनचंदजी संखलेचा बाडमेर के अलावा मन्दसौर, बाडमेर, सूरत, मुंबई, अहमदाबाद, बैंगलोर, दुर्ग, रायपुर आदि कई क्षेत्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इस बैठक में सदस्यों ने वर्तमान परिस्थितियों में प्रतिनिधि महासभा को पूर्ण रूप से पुष्ट करने की आवश्यकता पर बल दिया। सभी सदस्यों की राय रही कि सभी को पूर्ण प्रयत्न करके अधिक से अधिक सदस्य बनाने हैं।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की आज्ञानुसार सन् 2022 के प्रारंभ में आयोजित होना है। इस हेतु समारोह के अध्यक्ष श्री मंगलप्रभातजी लोढा मुंबई को बनाया गया। संयोजक संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर को नियुक्त किया गया।

सहस्राब्दी समारोह के संदर्भ में विस्तार से विचार विमर्श किया गया। सभी ने समिति बनाने पर जोर दिया। इस पर पूज्यश्री ने फरमाया कि अध्यक्ष एवं संयोजक आपस में विचार विमर्श कर समिति का विस्तार करेंगे।

बैठक के अंत में कार्यकाल पूरा हो जाने के कारण चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इससे पूर्व वर्तमान ट्रस्ट मंडल को धन्यवाद दिया गया। पूर्व अध्यक्ष दानवीर श्रावक माननीय श्री मोतीलालजी सा झाबक को सादर श्रद्धांजली अर्पण की गई।

सर्वसम्मति से गच्छ के वरिष्ठ श्रावक सर्व श्री मोहनचंदजी ढड्ढा चेन्नई को अध्यक्ष एवं श्री प्रकाशचंदजी सुराणा रायपुर को वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुना गया। उन्हें अधिकार दिया गया कि वे आपस में विचार विमर्श कर कार्यकारिणी का गठन करें।

खरतरगच्छ दिवस मनाया

कोट्टुर 6 अगस्त। नगर में केयुप कोट्टुर शाखा द्वारा खरतरगच्छ दिवस उपलक्ष में दादावाड़ी प्रांगण में सामूहिक गुरु इकतीसा पाठ, आरती, दीप प्रज्ज्वलन एवं ध्वजारोहण करके बड़े धूम धाम से मनाया गया। सुबह ११ बजे केयुप के सभी सदस्य अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम में जरूरत मंद सामग्री वितरित की गई।

खेतासर तीर्थ की प्रतिष्ठा 16 फरवरी 2020 को

धुलिया 11 अगस्त। चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की जन्मभूमि खेतासर जिला- जोधपुर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी के संरक्षक श्री मोहनचंदजी ढड्ढा, अध्यक्ष श्री तेजराजजी गुलेच्छा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड, महामंत्री श्री पदमजी टाटिया, संहमंत्री श्री बाबुलालजी मरडिया, कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना आदि द्वारा इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा हेतु धुलिया में ता. 11 अगस्त को पूज्यश्री से निश्रा प्रदान करने व अपनी अनुकूलतानुसार शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की गई।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर फाल्गुन वदि 8 रविवार ता. 16 फरवरी 2020 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। यह ज्ञातव्य है कि पेढी द्वारा खेतासर में यह कार्य संपन्न करवाया जा रहा है। इस हेतु पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से मूल खेतासर वर्तमान में दुर्ग निवासी श्री जुगराजजी संचेती परिवार द्वारा अपना विशाल भूखण्ड पेढी को अर्पण किया गया। श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की देखरेख में लगभग एक वर्ष में मंदिर दादावाडी, भोजनशाला, धर्मशाला, उपाश्रय आदि का निर्माण कार्य पूरा हुआ। इससे पूर्व पेढी द्वारा द्वितीय दादा मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि विक्रमपुर में मंदिर, दादावाडी, धर्मशाला, भोजनशाला आदि का निर्माण करवाया गया।

पेढी द्वारा प्रतिष्ठा पर सकल श्री संघ को पधारने की विनंती की गई।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी के पावन अवसर पर विशेष

श्री शंखेश्वर महातीर्थ से श्री पाटण तीर्थ का संघ

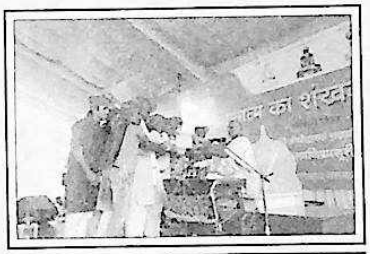

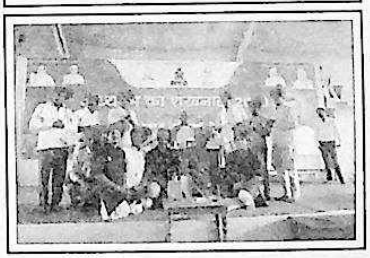

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की केन्द्रीय परिषद् के तत्वावधान में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री शंखेश्वर से पाटण तीर्थ का छह री पालित पद यात्रा संघ का भव्य आयोजन किया गया है।

यह संघ भगवान महावीर से चली आ रही अविच्छिन्न पट्ट परम्परा के खरतरगच्छ नामकरण को एक हजार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। चन्द्रगच्छ की इस सुविहित परम्परा का खरतरगच्छ नामकरण पाटण नगर में वि. 1075 में आचार्य जिनेश्वरसूरि के शास्त्रार्थ में विजयी रहने पर दुर्लभ राजा द्वारा किया गया था।

इस संघ के मुख्य लाभार्थी का लाभ मूल बिशाला वर्तमान में अहमदाबाद निवासी पूज्य पिताजी श्री मिश्रीमलजी बोथरा की पावन स्मृति में पू. माताजी श्रीमती गजीदेवी सुपुत्र गौतमचंदजी रतनलालजी जगदीशकुमारजी सुपौत्र नवीन रोहित रितिक नमन सुपौत्री साक्षी पूजा सिंघी तान्या बोथरा परिवार ने लिया है।

श्री बोथराजी सपरिवार पूज्यश्री को लाभ प्राप्त करने की विनंती करने धूलिया पहुँचे तथा मुख्य लाभार्थी का लाभ लेने व मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। पूज्यश्री ने उनकी विनंती को स्वीकार करते हुए 8 जनवरी 2020 को शुभ मुहूर्त्त में शंखेश्वर तीर्थ से संघ प्रस्थान का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। संघ ता. 12 जनवरी 2020 रविवार को नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में पाटण तीर्थ प्रवेश करेगा। वहाँ श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी द्वारा बने खरतरगच्छ सहस्राब्दी भवन का उद्घाटन होगा तथा संघपति मालारोपण का विधान होगा।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की बैठक संपन्न

धुलिया 11 अगस्त। धुलिया नगर में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की कार्यकारिणी की बैठक ता. 11 अगस्त 2019 को पेढी के अध्यक्ष संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

पिछली सभा की कार्यवाही को पारित करने के पश्चात् महामंत्री श्री पदमकुमारजी टाटिया ने वर्ष भर का हिसाब सदन के पटल पर रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

साधु साध्वी वैयावच्च के संबंध में विस्तार से विचार किया गया। निर्णय किया गया कि खरतरगच्छ के समस्त साधु साध्वियों के विहार वैयावच्च का पूरा लाभ पेढी के माध्यम से संपन्न हो। इस हेतु शीघ्र ही पेढी की ओर से अग्र साधु साध्वियों के दर्शन कर उनसे विचार विमर्श किया जायेगा तथा विनंती की जायेगी।

विहार धामों के निर्माण पर विचार कर निर्णय लिया गया कि पूरे भारत में आवश्यकतानुसार विहार धामों का निर्माण हो लेकिन समस्त विहारधामों का नाम आदि में एकरूपता हो। शीघ्र ही कुछ विहार धामों के निर्माण का निर्णय किया गया। संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा परिवार की ओर से 108 विहार धाम बनाने की योजना है।

विक्रमपुर दादावाडी व खेतासर दादावाडी का प्रतिवेदन निर्माण संयोजक श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने प्रस्तुत किया। पाटण में बन रहे खरतरगच्छ सहस्राब्दी भवन के निर्माण कार्य की पूरी जानकारी इसके संयोजक श्री दीपचंदजी बाफना ने प्रस्तुत की।

निर्णय किया गया कि पूज्य आचार्यश्री की पावन निश्रा में शंखेश्वर से पाटण तीर्थ का छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन हो रहा है। उस अवसर पर भवन का उद्घाटन संपन्न किया जाय।

कई दादावाडियों के जीर्णोद्धार में पेढी की ओर से लाभ लिया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन हुआ।

वडोदरा में अट्ठम तप आराधना

वडोदरा 8 अगस्त। प्रगट प्रभावी चिंतामणि तुल्य प्रभु पार्श्वनाथजी का श्रावण सुदि अष्टमी दिनांक ८ अगस्त को मोक्ष कल्याणक तथा पूज्या प्रसिद्ध व्याख्यात्री साध्वी हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की श्रावण सुदि दशमी जन्म तिथि के उपलक्ष में साध्वी श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा आदि ठाणा के सानिध्य में दिनांक ८-९-१० अगस्त को सामूहिक अट्ठम तप की आराधना कराई गई।

गुणानुवाद सभा में पूज्य साध्वीजी भगवंतों ने अपने गुरुवर्या के प्रति कृतज्ञतापूर्वक भाव प्रगट किये। इसके बाद श्री संघ की तरफ से ट्रस्टी श्री नरेशजी पारेख, श्री पारसजी वाघेला ने श्रद्धा भाव प्रस्तुत किया। तत्पश्चात हर्ष संचेती ने कविता प्रस्तुत करके अहोभाव प्रगट किया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में गुरुवर्या के प्रति गुरु भक्ति के सुन्दर गीत प्रस्तुत हुए और अंतिम चरण में रेखा सिंघवी, श्रीमती कविताजी झाबक, श्रीमती वसंतीजी एवं मुमुक्षु कुमारी नीलिमा भंसाली ने गुरुवर्या के प्रति श्रद्धापूर्वक अहोभाव प्रगट किया और सभी तप आराधकों की भूरी भूरी अनुमोदना करके विशेष बहुमान किया गया।

हिंगनघाट में 500 आयंबिल अनुमोदना

हिंगनघाट 14 अगस्त। छत्तीसगढ़ रत्न शिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता पू. गुरुवर्या श्री मनोहरश्रीजी म. की सुशिष्या सरलमना पू. सुभद्राश्रीजी म., नवकार जपेश्वरी पू. शुभंकराश्रीजी म. आदि की निश्रा में 14 अगस्त को पू. साध्वी शुभंकराश्रीजी म.सा. के 500 आयंबिल तपस्या अनुमोदना की गई।

इस आयोजित कार्यक्रम में बाहर गांव से भी श्रावक-श्राविका बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

-राजेश अमरचंद कोचर

बीकानेर में आयोजनों का उल्लास

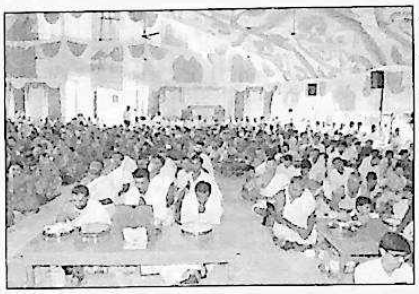

बीकानेर 6 अगस्त। गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में खरतरगच्छ दिवस जप, तप, ध्यान, देव व गुरु वंदना के साथ मनाया गया। खरतरगच्छ दिवस पर 11 अगस्त को महावीर भवन में सुबह नौ बजे रक्तदान शिविर आयोजित किया गया।

बीकानेर 18 अगस्त। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में बागड़ी मोहल्ले की ढढ्ढा कोटड़ी में विधि विधान सहित बीस स्थानक तपाराधना की गई। पूजन में 455 श्रावक-श्राविकाएं एक साथ बैठकर 20 पदों का सविधि पूजन किया। पूजन के दौरान अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने नवकार महामंत्र जाप व विभिन्न तपस्याएं की।

बीस स्थानक पूजा में ''अरिहंत, सिद्ध, पवयणस्स, आयरियाणं, थेराणं, उवज्झायाणं, सव्वसाहूणं, नाणस्स, दंसणस्स, विनयसंपन्नाणमं, चारित्तस्स, बंभवयधारीणं, गोयमस्स, किरियाणं, चरणस्स, जिणाणं, चरणस्स, अभिणव नाणस्स, सुयनाणस्स, व तित्थस्स पदों की 20-20 माला का विशेष जाप, 12 से लेकर 70 तक खमासमणे, स्वस्तिक, परिक्रमा व काउस्सग्ग की साधनादि क्रिया की गई। साध्वीवृंद के सान्निध्य में आयोजित पोस्टकार्ड पर भगवान आदि नाथ के नाम अंकित करने की प्रतियोगिता में ऋचा लूणिया प्रथम, अंजू लूणिया द्वितीय व निधि नाहटा तृतीय रही।

-हिमांशु सेठिया प्रचार मंत्री, के.यु.प, बीकानेर

केयुप मुंबई शाखा द्वारा दादा गुरुदेव महापूजन आयोजित

मुंबई 19 अगस्त। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की मुंबई शाखा द्वारा महाचमत्कारी दादागुरुदेव महापूजन का आयोजन प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी किया गया। पूज्य साध्वीवर्या धवल यशस्वी विमलप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित इस महापूजन में सैंकड़ों गुरुभक्तों ने हिस्सा लिया। रायपुर से पधारे विमलजी गुलेच्छा ने पूजन का विधि विधान करवाया तो प्रसिद्ध संगीतकार संजय रांका के संगीत में समस्त भक्त भावविभोर हो गये।

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्त्वावधान में आयोजित इस भव्य महापूजन में कई समाज के अग्रजनों की उपस्थिति सविशेष रही जिसमें भारतीय जनता पार्टी के मुंबई प्रदेश अध्यक्ष जिनशासन रत्न मंगलप्रभातजी लोढा प्रमुख है। आयोजन में स्वामिवात्सल्य का लाभ श्रीमान सिरेमलजी भीखाजी मरडीया परिवार ने लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में केयुप के सभी कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत मे सचिव संघवी मुकेश मरडिया द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया।

99 यात्रा की अनुमोदना

गिरनार 22 अगस्त। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्या गच्छगणिनी साध्वीवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में गिरनार तीर्थ में चातुर्मास की आराधना का ठाट लगा हुआ है।

इसी क्रम में पूज्या तपोरत्ना साध्वीवर्या श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ने अपार समता भावों के साथ गिरनार तीर्थ की 99 यात्रा संपूर्ण कर कीर्तिमान स्थापित किया। यात्रा के उपलक्ष में तलेटी से शोभायात्रा निकाली गई। सभी ने यात्रा की अनुमोदना करते हुए सुखशाता पृच्छा की।

फलौदी तपस्याओं का ठाट

फलोदी 2। अगस्त। पू. खरतरगच्छधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म. की विदुषी शिष्या पू. गच्छगणिनी मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 की सानिध्य में श्रुतज्ञान तप के तपस्वी तथा 9 उपवास, 10 उपवास के 10 तपस्वियों के बहुमान के निमित्ते फलौदी नगर में शोभायात्रा निकायी गयी।

शोभायात्रा चुड़िघरो के वास स्थित बडी धर्मशाला से रवाना होकर शहर के मुख्य मार्ग से होते हुए पुनः बड़ी धर्मशाला में पहुँची। वहाँ पूज्या गच्छगणिनीश्री जी ने प्रवचन तथा तपस्वियों का श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। लक्ष्मीचंदजी मालू, मांगीलाल गुलेच्छा, रूपलता गुलेच्छा, हर्ष कोठारी, सपना कोठारी, हेमलता गुलेच्छा, संदीप झाबक, साक्षी छाजेड़, दर्शन कानूगा एवं प्राची सुराणा ने 9 उपवास की तपस्या की। श्रुतज्ञान तप 40 दिन तक चला जिसमें 20 उपवास 20 पारणा में अनेक भाविक जुड़ें।

पूज्या साध्वी जी भगवंत ने इन तपस्वियों की अनुमोदनार्थ उपस्थित बंधुओं से रात्रि भोजन त्याग, सामयिक करने, चम्पल नहीं पहनने का त्याग करवाया, उपवास करने एवं पोरिसी करने के नियम लेने के उपदेश दिये।

-प्रकाश चौहान

चेन्नई में जन्म कल्याणक मनाया

चेन्नई 5 अगस्त। साहूकार पेट स्थित श्री धर्मनाथ मंदिर में पू. खरतरगच्छधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्याएं पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म., पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की सानिध्य में जिनदत्तसूरि मण्डल के तत्त्वावधान में 22वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक मनाया गया, जिसमें प्रभुभक्तों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

चेन्नई की धरा पर यह कार्यक्रम प्रथम बार हुआ। श्री कृष्ण और नेमिकुमार के बल की परीक्षा, नेमिनाथ प्रभु का पशुओं की आवाज सुनकर रथ मोड़ना एवं राजुल का विरह आदि में हर व्यक्ति की आंखें नम हो गई।

सौरीपुर नगरी के उद्घाटन का लाभ केशवणा-चेन्नई निवासी मोहनलालजी भरतकुमारजी ने एवं स्वामिवात्सल्य का लाभ रतनलालजी मंजू जी लोढा ने लिया। कार्यक्रम की प्रस्तुति गुंटुर निवासी श्री रमेशजी पोरवाल ने, मंच संचालन प्रफुल्ल कवाड़, संगीत श्री अंशुल कोठारी ने प्रस्तुत किया।

समाज रत्न उपाधि से विभूषित

जयपुर 30 अगस्त। पूज्या साध्वीवर्या श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ सुश्रावक श्री कुशलचंदजी सुराणा का श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ जयपुर द्वारा अभिनंदन किया गया।

समाज रत्न उपाधि के साथ अभिनंदन पत्र, शॉल आदि द्वारा सम्मानित किया गया। जहाज मंदिर परिवार द्वारा शुभकामनाएं।

गौतमजी हालावाले अध्यक्ष निर्वाचित

बाड़मेर जैन श्री संघ सूरत की नूतन ट्रस्टियों की मीटिंग शुक्रवार को सभापति गौतमचंद पारख के निर्देशन में कुशल दर्शन दादावाड़ी में सम्पन हुई।

जिसमें नई कार्यकारिणी (2019-21) का गठन किया गया। जिसमें चम्पालाल बोथरा एवं बाबुलाल संखलेचा को संस्था का संरक्षक बनाया गया। अध्यक्ष गौतमचंद बोहरा हालावाला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मांगीलाल मालू, उपाध्यक्ष प्रेम कुमार(पिंटू) धारीवाल, उपाध्यक्ष राकेशकुमार भंसाली, सचिव अशोक कुमार छाजेड़, सहसचिव दिलीप कुमार मेहता, कोषाध्यक्ष प्रकाशचंद तातेड़, सहकोषाध्यक्ष संजय कुमार मालू, सूचना मंत्री गौतमचंद धारीवाल, सहसूचना मंत्री अनिल कुमार बोथरा, संगठन मंत्री जगदीश बोथरा एवं रतनलाल चोपड़ा चुने गये।

कार्यकारणी सदस्य - पवन कुमार सेठिया, दिनेश कुमार सेठिया, पवन कुमार संखलेचा, गौतमचन्द संखलेचा, सम्पतराज पारख, गौतमचन्द गोलेच्छा, दिनेश कुमार नाहटा, संजय कुमार छाजेड़, मूलचन्द छाजेड़, बंशीधर डूंगरवाल, अशोक कुमार गोठी, सम्पतराज भंसाली, नखतमल घीया, कमल कुमार धारीवाल, पारसमल बरड़िया को बनाया गया।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सभी को हार्दिक बधाई।

जैसलमेर में चातुर्मास का उल्लास

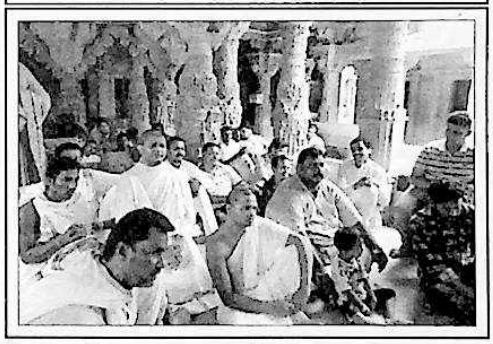

स्वर्णनगरी जैसलमेर तीर्थ की धरा पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती एवं शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. एवं पूज्य आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वे. ट्रस्ट एवं सकल श्रीसंघ जैसलमेर के तत्त्वावधान में चातुर्मास का माहौल शानदार रूप से बना हुआ है। विगत तीस वर्षों में खरतरगच्छीय मुनि भगवंतों का प्रथम बार यह चातुर्मास होने से पूरा जैन समाज आराधनामय है।

अक्षयनिधि तप, समोशरण तप, कषाय जय तप, अट्ठम, अट्ठाई के तपस्वियों का पच्चक्खान व पारणा शातापूर्वक हुआ। श्री रिषभ चोरडिया, सौ. रूपल पवन कोठारी, सौ. आरती भोजक ने अट्ठाई तपस्या कर श्रीसंघ का मान बढाया। संघ की तरफ से सभी तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

पर्युषण महापर्व में प्रतिदिन दुर्ग स्थित जिनालयों में सेवा-पूजा करने वालों का तांता, जैन भवन में प्रात: प्रवचन की धारा, प्रतिदिन परमात्मा की आंगी, सामूहिक आरती, चैत्यपरिपाटी आदि विविध आयोजनों में सभी श्रावक-श्राविकाओं ने प्रभुभक्त के साथ धर्मप्रेमी का नाम सार्थक किया।

संवत्सरी महापर्व के दिन प्रात: 8 बजे मूल कल्पसूत्र वाचन किया गया। तत्पश्चात साढे 10 बजे जैन भवन से दुर्ग जिनालयों की चैत्यपरिपाटी एवं स्नात्र महोत्सव, देववंदन आदि आयोजन किए गए।

पूज्य मुनि भगवंतों की निश्रा में चातुर्मास में आराधनामय विभिन्न आयोजन एवं साथ ही खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनभद्रसूरि ज्ञानभण्डार में संरक्षित प्राचीन पुस्तकों का सूचीकरण का विशद कार्य भी संपन्न हो रहा है। जिसका सकल जैन समाज जैसलमेर में आनंद का वातावरण है।

केयुप स्वाध्याय प्रकोष्ठ द्वारा करवायी गई पर्युषण पर्व आराधना

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के स्वाध्याय प्रकोष्ठ के स्वाध्यायिओं द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में पर्युषण पर्व आराधना कराई गई। देशभर के उन क्षेत्रों में जहां गुरु भगवंतों का चातुर्मास ना हो वहां के श्रावक गण अपने गच्छ की परंपरा अनुसार पर्युषण आराधना कर सके इस उद्देश्य से गठित स्वाध्याय प्रकोष्ठ द्वारा इस वर्ष पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की शुभ प्रेरणा एवं आशीर्वाद से 21 स्थानों पर आठों दिन पर्वाराधना करवाई गई।

स्वाध्यायिओं द्वारा पिछले वर्ष 10 स्थानों पर पर्युषण आराधना करवाई गई थी जो इस वर्ष बढकर 20 तक हुई। आगामी चातुर्मास में 50 से अधिक स्थानों पर पर्वाराधना करवाने का निर्धार रखा गया है। पर्युषण पर्व पर आराधना करवाने वाले स्वाध्यायिओं के नाम इस प्रकार है

- खापर- मीनाजी बैद (इंदौर), किरणजी सिंघवी (इंदौर)।
- वान्याविहीर- भुपतजी चोपड़ा (पचपदरा), प्रमोदजी भंसाली (मलकापुर)।
- शहादा- शुभमजी भंसाली (अक्कलकुवा), किर्तीकुमारजी गुलेच्छा (अक्कलकुवा)।
- दोंडाईचा- भारतीजी शहा (दोंडाईचा), अक्षिताजी बाफना (दोंडाईचा)।
- खेतिया- रतनजी कोठारी (दोंडाईचा), राजुजी कवाड (दोंडाईचा)।
- जलगांव (जामोद)- रुपालीजी नाहटा (शहादा), एश्वर्याजी चोपड़ा (शहादा)।
- उज्जैन- धनंजयजी शाह (नाशिक), आदेशजी चौरडिया (नंदुरबार)।
- कोट्टुर- मंजुजी जैन (अहमदाबाद), दिव्याजी बोथरा (इचलकरंजी)।
- जहाजपुर- कुशलजी कोचर (अक्कलकुवा), मदनजी कोचर (अक्कलकुवा)।
- मकराना- बाबुलालजी ललवाणी (मुंबई), प्रेमलताजी ललवाणी (मुंबई)।
- गुवाहाटी- अमितजी बाफना (गदक), रजतजी सेठिया (बाडमेर)।
- तिरपातुर- प्रतिकजी कोचर (तलोदा), अमितजी बाफना (गदग)।
- दिल्ली- रमेशजी लुंकड (इचलकरंजी), रमेशजी छाजेड (इचलकरंजी)।
- कडलुर- कमलेशजी नाहटा (जबलपुर), रितेशजी शहा (रायचुर)।
- फालना- प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल (मुंबई), चम्पालालजी वाघेला (मुंबई), प्रणयजी श्रीश्रीश्रीमाल (मुंबई)
- ईरोड- ललितजी कवाड, सुषमाजी, पायलजी (तिरपातुर)।
- तिरुपुर- हर्षितजी, गौरवजी, नमनजी (तिरपातुर)।
- विशाखापट्टनम- प्रफुलजी कवाड (तिरपातुर), विकासजी (तिरपातुर)।
- आर्वी- मुमुक्षु शिल्पाजी(चैन्नई), मुमुक्षु रुचिका संकलेचा(हेदराबाद)।
- नवसारी- बाबुलालजी मालू, शैलेशकुमारजी जैन (इचलकरंजी)।

समस्त स्वाध्यायिओं की भूरि भूरि अनुमोदना

-धनपत कानुंगो , राष्ट्रीय संयोजक (प्रसार प्रचार) केयुप

सादर श्रद्धांजलि

श्री त्रिलोकचंदजी भंसाली

रायपुर 20 अगस्त। मूल फलोदी हाल रायपुर निवासी श्री त्रिलोकचंदजी भंसाली (उम्र 83 वर्ष) का स्वर्गवास हो गया। श्री ऋषभदेव जैन मंदिर ट्रस्ट, रायपुर के विगत 25 सालों तक अध्यक्ष एवं ट्रस्टी साथ ही अनेक धार्मिक एवं सामाजिक, व्यापारिक संस्थाओं विभिन्न पदों पर रहे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री छगनलालजी गांधी

चितलवाना। श्री छगनलालजी गांधी का स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं देव-गुरु उपासक थे। दादा गुरुदेव के प्रति आपकी परम भक्ति थी। उनके स्वर्गगमन से परिवार में अपूरणीय क्षति हुई है। आप चितलवाना में हो रहे हर कार्य में अग्रगण्य रहते थे।

जहाज मंदिर परिवार हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

वर्ष भर में हमारे द्वारा जाने अनजाने आपका हृदय दुखाया हो तो हम हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं।

शा. विजयराज महेन्द्रकुमार चन्द्रगुप्तराज
कुमारपाल अंकित जिनेश सिद्धार्थ धनपाल श्रेष्ठकुमार
नवल कुमार धनेश्वर कुमार कटारिया

बिलाड़ा हाल मैसूर

सुश्री पायल का सिद्धितप

नंदुरबार 2 सितंबर। मूल सिवाणा हाल नंदुरबार निवासी
सुश्री पायल महेन्द्रजी जीरावला
ने लघुवय में सिद्धितप की उग्र तपस्या शातापूर्वक संपन्न की।
आप भविष्य में भी ज्ञान-ध्यान-तप के क्षेत्र में आगे बढें। यही शुभकामना।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री [illegible]ल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
[illegible]कुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
[illegible]ताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
[illegible]ाम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
[illegible]र्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
[illegible]कोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
[illegible]पुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
[illegible] जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री वडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरवार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियावाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भांयदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डवल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगाँव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
श्री राजमल भरतकुमार संखलेचा, रायपुर छत्तीसगढ़
श्री राजेन्द्र कुमार संचेती पुत्र श्री ताराचन्दजी संचेती, जयपुर
- जैन श्वेताम्बर श्री संघ, शेरगढ़
- श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर
- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली (कर्णाटक)
- श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, सारंगखेडा
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, अग्रहार, मैसूर
- श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. श्री संघ, ऊटी (नीलगिरी तमिलनाडू)
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई
- श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन

मेरी अपनी दौड़

चील की ऊँची उड़ान देखकर, चिड़िया कभी उदास नही होती,
वो अपने अस्तित्व में मस्त रहती है, मगर इंसान, इंसान की ऊँची उड़ान देखकर
बहुत जल्दी चिंता में आ जाते हैं, तुलना से बचें और खुश रहें
ना किसी से ईर्ष्या, ना किसी से कोई होड़दौड़
मेरी अपनी हैं मंजिलें, मेरी अपनी दौड़।

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

सुबह का समय था। जटाशंकर अपने मकान के बाहर दालान में कुर्सी पर बैठा था। चाय की चुस्कियों के साथ अखबार पढ़ने में मशगूल था।

अखबार तो पूरा पढ़ लिया था। अब विज्ञापन पढ़ रहा था।

एक विज्ञापन पढ़कर चौंका।

विज्ञापन में लिखा था-

'एक नई उपयोगी वैज्ञानिक खोज!

यदि आप भोजन करते-करते मक्खियों से परेशान हो रहे हैं तो आज ही 200 रूपये हमारे खाते में भेज कर हमेशा के लिये मक्खियों से छुटकारा पायें।

मक्खियों से पीछा छुडाने का शर्तिया साधन! जो हमारे वैज्ञानिकों ने अनेक संशोधन करके निर्मित किया है। आज ही राशि भेजिये और यंत्र प्राप्त कीजिये। यंत्र की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें विद्युत् संचार की कोई आवश्यकता नहीं है। जब बिजली गुल हो तब भी यह यंत्र उतना ही उपयोगी होता है।'

जटाशंकर बहुत राजी हो गया। वह मक्खियों से बहुत परेशान था। मक्खियाँ इतनी ज्यादा जिद्दी और हठी थी कि हटने का नाम ही नहीं लेती थी।

प्रसन्नता से भरकर उसने बिना ज्यादा जांच पडताल किये अतिशीघ्र विज्ञापन में दिये गये पते पर 200 रूपये भेज दिये। पार्सल की प्रतीक्षा करने लगा।

वह काल्पनिक आनंद में झूलने लगा। यंत्र आयेगा... मक्खियाँ सब गायब हो जायेगी। अहा! भोजन का कितना आनंद आयेगा?

आठ दिन बाद पार्सल मिला। खुशियों से भरकर कांपते हाथों से पार्सल खोला।

अन्दर यंत्र के नाम पर एक सफेद रूमाल और एक पत्र मिला। पत्र में लिखा था- 'यह रूमाल ही वह यंत्र है, जो मक्खियों को आपके पास फड़कने भी नहीं देगा। इस यंत्र का उपयोग करने से पहले इसकी विधि अच्छी तरह समझ लें।

इस रूमाल को बांयें हाथ में कस कर पकडें और दांयें हाथ से भोजन करते समय इसे अपने आगे दांयें बांयें धीरे-धीरे हिलाये। यदि मक्खियों का उपद्रव ज्यादा हो तो हिलाने की प्रक्रिया थोडी तीव्र करें।

आप अत्यन्त अचरज का अनुभव करेंगे कि एक भी मक्खी आपके ईर्दगिर्द दिखाई नहीं देगी। अवश्य ही आप इस अद्भुत चमत्कारी यंत्र को प्राप्त कर आनंद भरे अहोभाव का अनुभव करेंगे।'

जटाशंकर ने रूमाल हाथ में लिया तो अपना सिर पीट लिया। मैं यंत्र के नाम पर ठगा गया। विज्ञापन की लुभावनी भाषा ने मुझे ठग लिया। यह रूमाल तो 15 रूपये में दुकान पर मिल जाता है।

हम भी लगातार ठगा रहे हैं। पुद्गल ठग रहे हैं। मैं लालच में आकर पुद्गलों का संग करता हूँ। पुद्गलों के संग में सुख की कल्पना करता हूँ। दांव पर लगाता हूँ अपना अनमोल जीवन और बदले में पाता हूँ मात्र सुखाभास! आंख खुले... सपना टूटे... भ्रम मिटे तो यथार्थ का बोध हो।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343 042, जिला -जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in www.Jahajmandir.com www.Jahajmandir.org

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस, पुरा मोहल्ला, खिल्ची रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 2240